



# ‘पंच गौरव’ कार्यक्रम



## जिला पुस्तिका

जिला प्रशासन अलवर, राजस्थान



मुख्यमंत्री  
राजस्थान

## संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच-गौरव कार्यक्रम की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच-गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूं।

  
(भजन लाल शर्मा)



## विषय सूची

1. प्रस्तावना
2. जिला अलवर
3. पंच गौरव कार्यक्रम
4. एक जिला एक उत्पाद
5. एक जिला एक उपज
6. एक जिला एक प्रजाति
7. एक जिला एक खेल
8. एक जिला एक पर्यटन स्थल

## प्रस्तावना

जिले की अनूठी भौगोलिक संरचना, सांस्कृतिक विविधता, पारंपरिक कला और कारीगरी तथा विशेष प्रकार की कृषि और वनस्पति की उपज ने इसे एक विशिष्ट पहचान दिलाई है। यहां की विरासत और पारिस्थितिकी हमें अपनी पहचान पर गर्व करने का अवसर देती है। जिले में विभिन्न प्रकार के हस्तशिल्प, उद्योग, कृषि और खनिज संसाधन हैं जो न केवल क्षेत्रीय बल्कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी महत्वपूर्ण हैं।

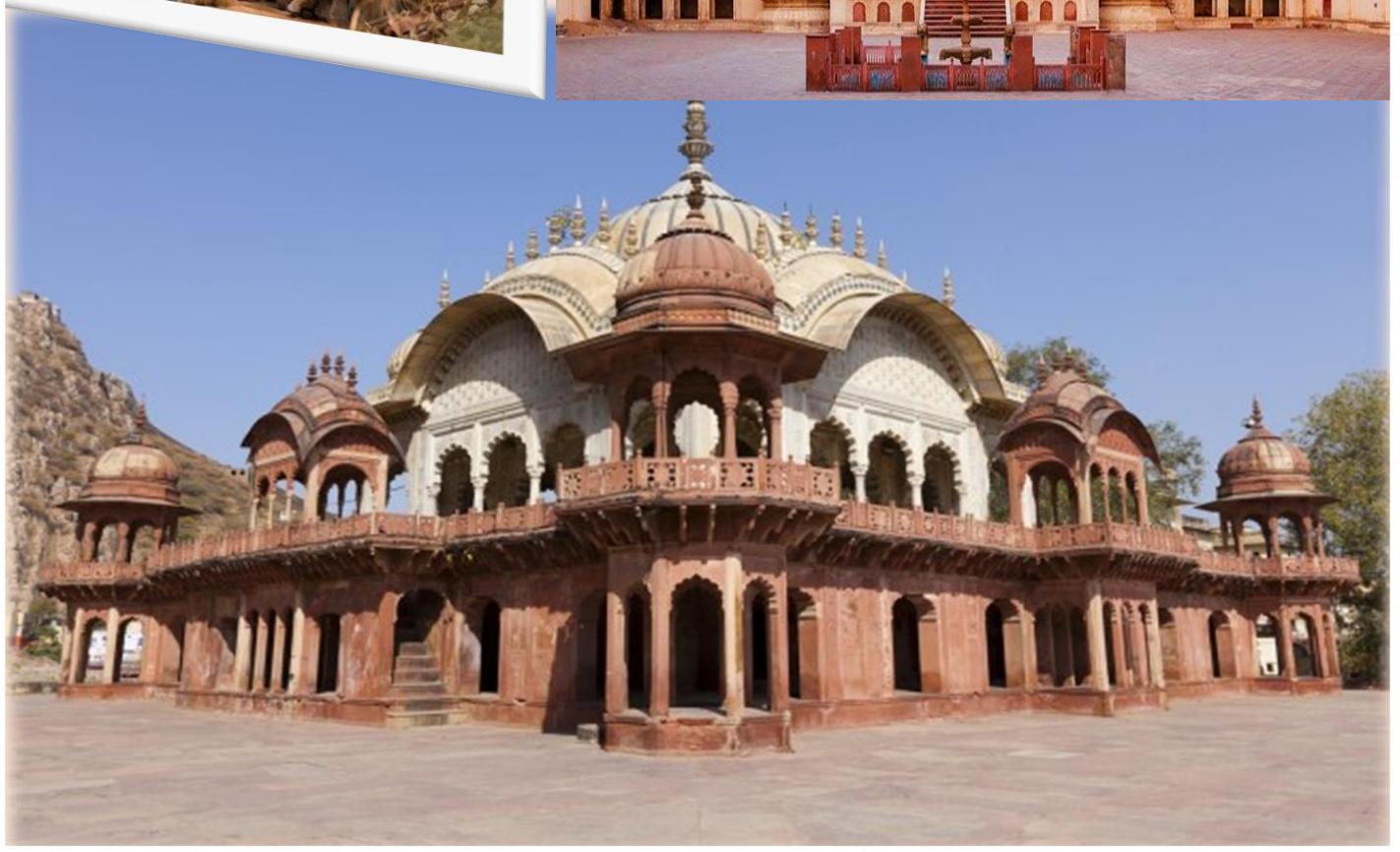
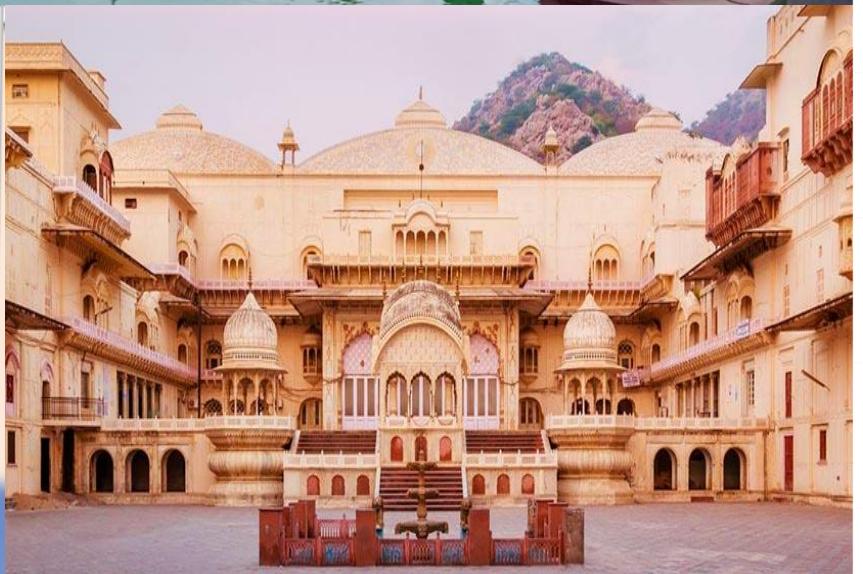
राज्य सरकार द्वारा शुरू किए गए "पंच गौरव" कार्यक्रम के तहत हमारे जिले की विशिष्टताओं को संरक्षित करने और उन्हें और बढ़ावा देने के लिए एक समर्पित कार्ययोजना बनाई जाएगी। इस कार्यक्रम के माध्यम से हमारे जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान मिलने की संभावना है।

इस पुस्तक में जिले के पंच गौरव तत्वों को ध्यान में रखते हुए चयनित किए गए प्रमुख उत्पादों, उपजों, वनस्पतियों, खेलों और पर्यटन स्थलों का विवरण दिया गया है। इसके माध्यम से जिले की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और पारिस्थितिकीय धरोहर का संरक्षण और विकास सुनिश्चित करेगा, साथ ही साथ रोजगार के अवसरों में भी वृद्धि करेगा।

हमारे जिले की अनूठी पहचान और सामर्थ्य को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इस पुस्तक में दी गई जानकारी जिले के सर्वांगीण विकास में सहायक सिद्ध होगी। साथ ही "पंच गौरव" के तहत चयनित तत्वों के संवर्धन से जिले को न केवल सांस्कृतिक दृष्टि से बल मिलेगा बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी विकास के नए मार्ग खुलेंगे।

यह पुस्तक जिले के ऐतिहासिक गौरव और भविष्य के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में कार्य करेगी जिससे स्थानीय निवासियों को गर्व होगा और समग्र रूप से जिले की समृद्धि में वृद्धि होगी।

# जिला अलवर



## जिला अलवर

अलवर राज्य की स्थापना से पूर्व, यह क्षेत्र मराठों और भरतपुर के जाट शासकों के अधीन रहा। नरुका जागीरदार कल्याणसिंह ने जयपुर राज्य के अधीन ढाई गाँव की जागीर के साथ माचाड़ी से अपना शासन प्रारंभ किया। बाद में इस जागीर का विस्तार करते हुए राव राजा प्रताप सिंह ने दिनांक 25 नवम्बर, 1775 को भरतपुर के शासक से अलवर का किला लेकर स्वतंत्र अलवर राज्य की स्थापना की। अलवर की स्थापना के पश्चात नरुका शासकों ने अलवर को न केवल राजनैतिक ऊँचाइयों पर पहुँचाया, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से इसे समृद्ध भी किया। अलवर राज्य में एक अच्छी प्रशासनिक व्यवस्था उनके द्वारा कायम की गई।

विविधताओं वाला अलवर, रियासत से जिला बना है, जिसमें अलवर रियासत, चीफशिप नीमराणा, जयपुर रियासत की कोटकासिम तहसील व शाहजहांपुर के 5 गाँव सम्मिलित हैं। यहाँ की संस्कृति के भीतर अनेक छोटी-छोटी संस्कृतियाँ हैं। यहाँ अनेक धर्मों—हिंदू, मुसलमान, ईसाई, जैन, बौद्ध और उनके विभिन्न संप्रदायों के लोग निवास करते हैं। आज भी अलवर साझा संस्कृति का केन्द्र है। हिन्दी, पंजाबी, अंग्रेजी, उर्दू और फारसी भाषाओं सहित यहाँ ढूँढ़ाड़ी, ब्रज, राठी खड़ी बोली एवं मेवाती आदि बोलियों की बहुतायत है।

अलवर, भरतपुर, धौलपुर एवं करौली के शासकों ने भारत सरकार के गृह मंत्रालय की सलाह पर अपने क्षेत्रों को एक नये राज्य में शामिल करने का निश्चय किया, जिसमें एक ही कार्यपालिका, विधायिका एवं न्यायपालिका कार्य करेंगी। इसके अनुसार उन्होंने भारत सरकार के साथ एक प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर किए तथा एक संघ बनाया, जिसका नाम “मत्स्य संघ” रखा गया। इसकी राजधानी अलवर बनाई गई। इसके राजप्रमुख धौलपुर के महाराजा तथा उपराज प्रमुख अलवर के महाराजा बनाए गए।

मत्स्य संघ का उद्घाटन दिनांक 17 मार्च, 1948 को भरतपुर में हुआ। मत्स्य संघ को 3 जिलों, 8 उपखण्डों, 23 तहसीलों एवं 12 उपतहसीलों में विभाजित किया गया। अलवर जिले में 3 उपखण्ड, 8 तहसील एवं 6 उप तहसीलें थी। माह अप्रैल, 1949 में राजस्थान सरकार ने अपना मुख्यालय जयपुर में बनाया तथा मत्स्य संघ को दिनांक 15 मई, 1949 से राजस्थान के साथ मिला दिया गया।

जिले में मुख्यतः चार प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं जिले के पूर्वी भाग में बृज भाषा पश्चिम में मारवाड़ी, उत्तर में मेवाती एवं दक्षिण में ढूँढ़ाड़ी बोली का प्रचलन है, किन्तु वर्तमान में सामान्य हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। जिले में दर्शनीय स्थलों में सरिस्का अभ्यारण, पाण्डुपोल, भर्तृहरि, नीलकण्ठ महादेव, तालवृक्ष, नलदेश्वर, अजबगढ़, भानगढ़ आदि सुरम्य प्राकृतिक स्थल हैं। सिलीसेड़, जयसमन्द बाँध, अलवर शहर का होपसर्कस एवं अजायबघर (संग्रहालय) बाला किला तथा करणी माता का मंदिर पर्यटकों का मन मोह लेते हैं।

राजस्थान सरकार , राजस्व (ग्रुप-1) विभाग की अधिसूचना क्रमांक प.9(18) राज-1/2022-(10) दिनांक 05.08.2023 के अनुसार राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 (1956 का अधिनियम संख्या 15) की धारा 15 एवं 16 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए राज्य सरकार एतद् द्वारा अलवर जिले का पुनर्गठन किया गया। पुनर्गठित अलवर जिले में निम्नलिखित उपखण्ड तथा तहसीलें सम्मिलित रहेंगी:-

जिला	नाम उपखण्ड	नाम तहसील
अलवर	1. अलवर	अलवर
	2. गोविन्दगढ़	गोविन्दगढ़
	3. रैणी	रैणी
	4. लक्ष्मणगढ़	लक्ष्मणगढ़
	5. मालाखेड़ा	मालाखेड़ा
	6. राजगढ़	राजगढ़
		टहला
	7. रामगढ़	रामगढ़
		नौगांवा
	8. थानागाजी	थानागाजी
		प्रतापगढ़
	9. करूमर	करूमर

## 'पंच—गौरव' कार्यक्रम

### 1. प्रस्तावना:-

राजस्थान राज्य के जिलों में विभिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं। इस कारण यहां अलग—अलग तरह की उपज पैदा होती है एवं विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ पाई जाती हैं। इसी प्रकार राज्य के विभिन्न जिलों में अलग—अलग प्रकार के हस्तशिल्प एवं औद्योगिक उत्पाद प्रमुखता से बनाए जाते हैं। इसके साथ ही राज्य में महत्वपूर्ण खनिजों का खनन एवं प्रसंस्करण कार्य भी कई जिलों में किया जाता है। पर्यटन की दृष्टि से भी राज्य के प्रत्येक जिले में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं वन्यजीव पर्यटन आदि प्रमुख स्थल मौजूद हैं। राज्य में विभिन्न खेल गतिविधियां भी जिलों की प्रमुख पहचान रही हैं।

राज्य के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण, संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दी जा सकती है।

प्रत्येक जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही इन गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोत्तरी कर प्रदेश के सभी जिलों के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में "पंच—गौरव" कार्यक्रम शुरू किया गया है।

कार्यक्रम अन्तर्गत राज्य के प्रत्येक जिले में उसकी विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए "पंच गौरव" के रूप में प्रत्येक जिले में एक जिला—एक उत्पाद, एक जिला—एक उपज, एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति, एक जिला—एक खेल एवं एक जिला—एक पर्यटन स्थल चिह्नित किए गए हैं। जिला स्तर पर चयनित पंच गौरव के संवर्धन एवं विकास हेतु एक विस्तृत कार्ययोजना की गई है।

### 2. कार्यक्रम के उद्देश्य :

- जिले की आर्थिक, पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और संवर्धन।
- स्थानीय शिल्प, उत्पाद, कला को संरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवत्ता, विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
- स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिलों में स्थानीय रोजगार को बढ़ाकर जिलों से प्रवास को रोकना।
- जिलों के मध्य स्वरक्षण प्रतिस्पर्धा विकसित करना।
- प्रमुख वनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा देना।
- खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सृजित करना।
- ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना एवं इन स्थलों पर वैशिक स्तर की आधारभूत सुविधाएं विकसित करना।
- सभी जिलोंमें समान विकास को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय विषमताओं/असंतुलन को कम करना।

### 3. कार्यक्रम क्रियान्वयन हेतु शासकीय संरचना :

#### अ. नोडल विभाग

- पंच गौरव कार्यक्रम हेतु नोडल विभाग आयोजना विभाग होगा। राज्य स्तर पर एक जिला—एक उपजके लिए कृषिएवं उद्यानिकीविभाग, एक जिला—एक वनस्पतिप्रजाति के लिए वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तनविभाग, एक जिला—एक उत्पाद के लिए उद्योगएवं वाणिज्यविभाग, एक जिला—एक पर्यटन स्थल के लिए पर्यटन, कला एवं संस्कृतिविभाग तथा एक जिला—एक खेल के लिए खेल एवं युवा मामलात् विभाग नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करेंगे।

- पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु मुख्य सचिव महादेय की अध्यक्षता मे राज्य स्तरीय समिति का गठन किया गया है।

### ब. समन्वय

प्रत्येक जिले में, जिला कलेक्टर इन 5 विभागों के साथ समन्वय बनाते हुए इस कार्यक्रम का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करायेंगे। जिले का स्थानीय प्रशासन और विकास अधिकारी कार्यक्रम के कार्यान्वयन और प्रमाणिकता के मूल्यांकन की जिम्मेदारी संभालेंगे। वे सुनिश्चित करेंगे कि सभी गतिविधियाँ निर्धारित मानदंडों के अनुरूप संचालित हों।

पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के अलवर जिला स्तर पर प्रभावी संचालन हेतु जिला कलेक्टर की अध्यक्षता मे निम्नानुसार समिति का गठन किया गया है।

क्र0 सं0	विभाग का नाम	पद
1.	सहायक वन संरक्षक, वन एवं पर्यावरण विभाग, अलवर	सदस्य
2.	महाप्रबंधक, जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र, अलवर	सदस्य
3.	मुख्य लेखाधिकारी, जिला कलैक्टरेट, अलवर	सदस्य
4.	संयुक्त निदेशक, सूचना एवं जनसंचार विभाग, अलवर	सदस्य
5.	सहायक निदेशक, पर्यटन विभाग, अलवर	सदस्य
6.	सहायक निदेशक, उद्यान विभाग, अलवर	सदस्य
7.	सहायक निदेशक, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, अलवर	सदस्य
8.	जिला खेल अधिकारी, खेल विभाग, अलवर	सदस्य
9.	उप निदेशक, आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग, अलवर	सदस्य सचिव

## पंच गौरव कार्यक्रम—अलवर

पंच गौरव कार्यक्रम अन्तर्गत राज्य के अलवर जिले में उसकी विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए ‘पंच-गौरव’ के रूप में एक जिला—एक उत्पाद, एक जिला—एक उपज, एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति, एक जिला—एक खेल एवं एक जिला—एक पर्यटन स्थल चिह्नित किए गए हैं।

**अलवर जिले में चिह्नित पंच गौरव की सूची :**

उपज	वनस्पति प्रजाति	उत्पाद	पर्यटन स्थल	खेल
प्याज	अर्जुन	ऑटामोबाइल पार्ट्स	सरिस्का टाईगर रिजर्व	कुश्ती

**उपज**

**प्याज**



**वनस्पति प्रजाति**

**अर्जुन**



**उत्पाद**

**ऑटामोबाइल पार्ट्स**



**पर्यटन स्थल**

**खेल**

**सरिस्का टाईगर रिजर्व**



**कुश्ती**



# एक जिला एक उत्पाद – ऑटो कम्पोनेन्ट्स



## उद्योग एवं वाणिज्य विभाग, अलवर

- जिले का नाम – अलवर
- पंच गौरव के तहत चयनित उत्पाद – ऑटो कम्पोनेंट्स
- संक्षिप्त परिचय :-

राज्य सरकार द्वारा सभी जिलों के पंचमुखी विकास के लिए पंच गौरव कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। इस कार्यक्रम में प्रत्येक जिले के पांच तत्वों पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। इन पाँच तत्वों में अलवर जिले में एक जिला – एक उत्पाद (ऑटो कम्पोनेंट) का चयन किया गया है।

देश व प्रदेश की राजधानी के बीचों-बीच स्थित अलवर जिला औद्योगिक पृष्ठभूमि में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। जिले के पुराना औद्योगिक क्षेत्र अलवर एवं मत्स्य औद्योगिक क्षेत्र में लगभग 160 ऑटो कम्पोनेंट की इकाईयां उत्पादन से जुड़ी हुई हैं। इन इकाईयों से लगभग 7500 लोगों को रोजगार दिया जा रहा है तथा इनका वार्षिक टर्नओवर लगभग 10 हजार करोड़ रुपये है। ऑटो कम्पोनेंट इकाईयों द्वारा हाइड्रोलिक पंप, एल्यूमिनियम कास्टिंग, साइड कवर, गेयर बूसेज, हाइड्रोलिक गियर पंप, एमएस कास्टिंग, ब्रेक पेड, एक्जास्ट पाईप, मैटल पाईप, ऐयर कम्प्रैशर पार्ट्स आदि का निर्माण किया जाता है। अलवर जिले में मुख्य रूप से ट्रैफे ट्रैकर्स, अशोका लिलेण्ड, हरिओम प्रिसीजन, अलाईज प्रा. लि., हाईटैक ऑटो प्रा. लि., नेशनल गियर्स, जी. एम. हाईटैक, कछावा इन्जिनियरिंग, शशांक इन्जिनियरिंग, एस.एस.बी इन्जिनियरिंग, आर.एम. एण्टरप्राइजेज आदि इकाईयां ऑटो कम्पोनेंट्स का उत्पादन कर रही हैं। इन इकाईयों द्वारा मुख्य रूप से युरोप, संयुक्त राज्य अमेरिका, मलेशिया, तुर्की, दक्षिणी अफ्रिका आदि देशों में निर्यात किया जा रहा है।

राज्य सरकार द्वारा राज्य के प्रत्येक जिले को मैन्यूफैक्चरिंग हब बनाने के लिए ‘राजस्थान एक जिला एक उत्पाद नीति 2024’ लागू कर आवश्यक दिशा-निर्देश जारी किये जा चुके हैं। जिसमें प्रत्येक जिले द्वारा चयनित उत्पादों के विनिर्माण, पैकेजिंग एवं विपणन से संबंधित सहायता प्रदान करने हेतु अनेक लाभकारी प्रावधान किये गये हैं। साथ ही, आधुनिक तकनीक से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम, ओडीओपी डिस्प्ले एवं ओडीओपी एक्सपोर्ट के आयोजन का भी प्रावधान किया गया है।

### एक जिला – एक उत्पाद योजना

#### उद्देश्य:-

- ओडीओपी उत्पाद के लिए प्रत्येक जिले को निर्यात हब के रूप में विकसित करना।
- ओडीओपी उत्पाद की गुणवत्ता, डिजाइन एवं विपणन में सुधार लाना।
- ओडीओपी से संबद्ध दस्तकार/हस्तशिल्पी/कृषक/उत्पादकों हेतु रोजगार सृजन, कौशल प्रशिक्षण तथा हैण्डहोल्डिंग सपोर्ट प्रदान करना।

योजना की अवधि:- योजना दिनांक 31 मार्च, 2029 तक प्रभावी रहेगी।

## योजना के तहत देय सहायता एवं सुविधाएँ:-

### (1) नवीन ओडीओपी उद्यम हेतु मार्जिन मनी अनुदान

(अ) सूक्ष्म (माइक्रो) ओडीओपी उद्यम के लिए प्रोजेक्ट लागत का 25 प्रतिशत या अधिकतम 15 लाख रुपये  
(ब) लघु (स्मॉल) ओडीओपी उद्यम के लिए प्रोजेक्ट लागत का 15 प्रतिशत या अधिकतम 20 लाख रुपये

**नोट:-** एससी / एसटी  
उद्यमी / महिला उद्यमी / विशेष



योग्यजन / 35 वर्ष से कम आयु के युवा उद्यमी को सूक्ष्म अथवा लघु ओडीओपी उद्यम की स्थापना पर अधिकतम 5 लाख रुपये तक अतिरिक्त लाभ देय है।

### (2) नवीनतम तकनीक / सॉफ्टवेयर के अभिग्रहण पर – कुल अभिग्रहण लागत का 50 प्रतिशत अधिकतम 5 लाख रुपये तक की सहायता का प्रावधान।

(अ) गुणवत्ता प्रमाणन सहायता – कुल लागत का 75 प्रतिशत अधिकतम 3 लाख रुपये तक के एकबारीय पुनर्भरण का प्रावधान।

### (ब) मार्केटिंग हेतु वित्तीय सहायता:-

a. राज्य में आयोजित राष्ट्रीय / अन्तर्राष्ट्रीय मेलों / प्रदर्शनी में भाग लेने पर

i. स्टॉल किराये का 75 प्रतिशत, अधिकतम 50,000 रुपये तक पुनर्भरण।

ii. बस / रेल का किराया।

b. राज्य के बाहर आयोजित राष्ट्रीय / अन्तर्राष्ट्रीय मेलों / प्रदर्शनी में भाग लेने पर

i. स्टॉल किराये का 75 प्रतिशत, अधिकतम 1,50,000 रुपये तक पुनर्भरण।

ii. बस / रेल / हवाई यात्रा का किराया।

c. विदेशों में आयोजित मेलों / प्रदर्शनी में भाग लेने पर

i. स्टॉल किराये का 75 प्रतिशत, अधिकतम 2,00,000 रुपये तक पुनर्भरण।

ii. हवाई यात्रा का किराया।

### (3) ई-कॉमर्स हेतु प्रोत्साहन:-

a. ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म द्वारा वसूली गई फीस / कमीशन का पुनर्भरण – 75 प्रतिशत अधिकतम एक लाख रुपये तक।

b. ई-कॉमर्स वेबसाईट या केटेलॉगिंग सर्विस हेतु व्यय का 60 प्रतिशत या अधिकतम 75,000/- एक मुश्त सहायता ।

(4) अन्य प्रावधान:-

- a. कौशल विकास हेतु राजस्थान निर्यात संवर्द्धन परिषद् के माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन,
- b. दस्तकारों/हस्तशिल्पियों/उद्यमियों को पैकेजिंग संबंधी प्रशिक्षण
- c. राजस्थान ओडीओपी एक्सपों का आयोजन ।
- d. पीएम एकता मॉल एवं ओडीओपी डिस्प्ले वॉल्स के माध्यम से ओडीओपी उत्पादों का प्रचार ।





एग्रीफाउन्ड लाइट रेड



एग्रीफाउन्ड डाक रेड



एन .एच .आर .डी .एफ .-रेड



एग्रीफाउन्ड व्हाइट



## एक जिला एक उपज – प्याज



## कृषि एवं उद्यानिकी विभाग, अलवर

1.जिले का नाम – अलवर

2.पंच गौरव के तहत चयनित उपज – प्याज

3.संक्षिप्त परिचय :-

### एक जिला एक उपज (ODOP)–प्याज (अलवर जिले का गौरव) गंठियों द्वारा अमेती खरीफ प्याज की उत्पादन तकनीक

अलवर जिले में प्याज का सब्जियों में महत्वपूर्ण स्थान है यह फसल प्रमुख रूप से बीज द्वारा पौध तैयार कर लगाई जाती है। किन्तु अलवर जिले में खरीफ प्याज की बुवाई माह अगस्त के प्रथम सप्ताह से सितंबर माह तक की जाती है। इसके लिए माह दिसंबर से माह अप्रैल तक तैयार की गई गंठियों (बल्ब) का उपयोग किया जाता है। प्याज की अच्छी उपज लेने के लिए प्रति हैक्टर 15–20 किवंटल (2–2.5 सेमी० आकार) गंठियों की आवश्यकता रहती है। जिले में किसानों द्वारा उत्पादित लाल प्याज की आवक मंडियों में अक्टूबर से दिसंबर माह तक रहती है। जिसकी मांग राजस्थान के साथ–साथ अन्य पड़ोसी राज्यों यथा पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश सहित पड़ोसी देशों यथा पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, भूटान सहित अरब देशों में भी रहती है।

जिले में प्याज की खेती मुख्यतः मालाखेड़ा, उमरैण, रामगढ़, गोविंदगढ़, लक्ष्मणगढ़ व अलवर तहसील क्षेत्र में की जाती है। वर्तमान में प्रतिवर्ष जिले में 20 से 25 हजार हैक्टर क्षेत्रफल में प्याज की खेती की जाती है। जिले में लगभग 25–30 हजार किसान प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्याज की खेती से जुड़े हुए हैं। इस वर्ष खरीफ सीजन में जिले में लगभग 25675 हैक्टर क्षेत्रफल में प्याज की खेती की गई है। जिले में प्याज की औसतन पैदावार 180 से 200 किवंटल प्रति हैक्टर होती है। अलवर जिले के साथ–साथ समीपवर्ती खैरथल–तिजारा जिले में भी प्याज की खेती प्रमुख रूप से की जाती है। जिले में पुर्नगठित मौसम आधारित फसल बीमा योजना के तहत प्याज फसल चयनित है। भारत सरकार के खाद प्रसंकरण उद्योग मंत्रालय द्वारा अलवर जिले हेतु प्याज फसल को एक जिला एक उत्पाद में पी.एम.एफ.एम.ई. (PMFME) योजना के तहत अनुमोदित किया गया है।

प्याज का उपयोग मुख्य रूप से सब्जियों एवं सलाद में किया जाता है किंतु इसके साथ ही प्रसंस्करण उपरांत प्याज से डिहाइड्रेटेड प्याज पाउडर (Onion Powder), डिहाइड्रेटेड प्याज फ्लैक्स (Onion Flakes) प्याज ज्यूस (Onion Juice), प्याज ऑयल (Onion Oil), प्याज पेस्ट (Onion Paste), प्याज आधारित पशुचारा (Onion Based Animal Feed) आदि उप उत्पाद प्राप्त किये जा सकते हैं। स्थानीय बाजार में प्रसंस्करण उपरांत प्राप्त प्याज उप उत्पादों की माँग होने पर प्रसंस्करण ईकाई की संस्थापना की संभावनाएं हो सकती है।

## गठियां पैदा करने की उन्नत विधि

खरीफ मौसम की अगेती प्याज की फसल के लिए खरीफ प्रजातियों जैसे एग्रीफाउण्ड डार्क रेड, अर्का कल्यान, बसन्त 780 तथा भीमा डार्क रेड, एल-883 की गर्मी के मौसम में छोटी-छोटी गठियाँ बनाई जाती हैं और फिर उन्हें वर्षा के मौसम में मुख्य खेत में लगाते हैं।

### बीज की मात्रा—

गंठियाँ बनाने के लिए 10—12 ग्राम बीज प्रति वर्ग मी. की दर से ऊँची उठी हुई या समतल क्यारियों में बोते हैं। 7—8 किग्रा. बीज द्वारा प्राप्त गंठियाँ एक हेक्टेयर खेत की रोपाई के लिए पर्याप्त होती है।

### बीज बुआई का समय—

अच्छी गंठियाँ प्राप्त करने के लिए बीज की बुआई का सर्वोत्तम समय मध्य जनवरी से लेकर फरवरी के प्रथम सप्ताह तक का होता है जिसमें अधिक गंठियाँ प्राप्त होती है। अलवर में 5 से 25 जनवरी तक बुआई करने से अच्छा अंकुरण तथा अच्छी गंठियों की प्राप्ति होती है।

### बीज की बुआई

बीज की बुआई मिट्टी की किस्म के आधार पर ऊँची उठी हुई अथवा समतल क्यारियों में पंक्तियों में करते हैं। बुआई से पूर्व बीज को थाइरम या कैप्टान नामक कवकनाशी से 2 ग्रा./किग्रा. बीज की दर से उपचारित करने से आर्द्धगलन की संभावना कम हो जाती है। इसी प्रकार मिट्टी को भी थाइरम या कैप्टान नामक कवकनाशी द्वारा 4—5 ग्रा. प्रति वर्ग मीटर की दर से उपचारित करने से आर्द्धगलन रोग से सुरक्षा मिलती है। कार्बोफ्यूरान 1 मिग्रा. (सक्रिय तत्व) प्रति हेक्टेयर की दर से मिट्टी में मिलाने से थ्रिप्स कीट की रोकथाम होती है।

खेत की मिट्टी में बुआई से 15—20 दिन पूर्व सिंचाई करके 250 गेज पारदर्शी पॉलीथीन द्वारा ढक कर सौर्यकरण करने से कीड़ों के अण्डे, बीमारियों के रोगाणु तथा खरपतवार के बीज नष्ट हो जाते हैं। ट्राइकोडरमा विरिडी नामक जैविक फफूंदनाशक का 5.0 किग्रा. प्रति हेक्टेयर की दर से 25 गुना सड़ी हुई बारीक गोबर की खाद या नम मिट्टी में मिलाकर भूमि में एक सप्ताह पूर्व मिलाने से आर्द्धगलन रोग से बचाव होता है।

बुआई करने के बाद बीज को बारीक छनी हुई गोबर की खाद या कम्पोस्ट से ढक कर फव्वारे द्वारा सिंचाई करते हैं। इसके पश्चात् क्यारियों को धान की पुआल, सूखी धास—फूस या गन्ने की सूखी पत्तियों से ढक देते हैं जिससे आवश्यक नमी व तापमान बना रहता है। समय—समय पर आवश्यकतानुसार सिंचाई करते रहते हैं, टपक या तुषार द्वारा भी सिंचाई की जा सकती है। जैसे ही अंकुरण पूरा हो जाता है, पुआल इत्यादि को हटा देते हैं अन्यथा पौध टूट सकती है।

खरपतवार नियन्त्रण हेतु समय—समय पर निराई गुड़ाई करते रहते हैं। खर पतवार नियन्त्रण हेतु खर पतवार नाशी पेन्डीमिथेलीन की 2.5 लि. या आक्सीफ्लोर एन की 600 मिली. मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से बुआई के 15–20 दिन पूर्व डालने से खरपतवार कम होती है।

पौध को अप्रैल मई तक खेत में रखते हैं, समय—समय पर सिंचाई करते रहते हैं, खरपतवार यदि आ गए हों तो उनको भी निकाल देते हैं। बुआई के 50–60 दिन पश्चात् पौध में गांठे बनना प्रारम्भ हो जाती है। जब गंठियों का आकार 1.5 से 2.5 सेमी. तक हो जाता है, सिंचाई बन्द कर देते हैं।

इसके पश्चात् खुदाई से 10 दिन पूर्व 0.1% कार्बन्डाजिम का छिड़काव करने से भण्डारण में गंठियों के सड़ने—गलने की संभावना कम हो जाती है। जब पौधे का उपरी भाग पीला पड़कर गर्दन से गिर जाता है तो गंठियों की तने सहित खुदाई करके 1.5 सेमी. से 2.5 सेमी. की गंठियों को छाँट कर हवादार घर में पत्तियों सहित बण्डल बनाकर जुलाई—अगस्त तक भण्डारित करते हैं। सामान्यतः 1.5 सेमी. से कम आकार की गंठियाँ लगाने से स्थापित नहीं हो पाती, अंकुरण के समय ही नष्ट हो जाती हैं या सड़ जाती हैं। इसके अतिरिक्त 2.5 सेमी. से अधिक व्यासवाली गंठियाँ लगाने से दुफाड़ (डबल) और डण्ठल युक्त फसलकी संभावना अधिक होती है, उत्पादन लागत भी बढ़ जाती है। अतः 1.5 सेमी. से 2.5 सेमी. आकार की गंठियाँ लगाने से लागत कम आती है, उत्पादन भी अधिक एवं गुणवत्ता युक्त प्राप्त होता है।

### गंठियों द्वारा खरीफ प्याज उत्पादन की उन्नत तकनीक खेत की तैयारी:-

खेत की 4–5 बार जुताइयाँ करके, पाटा चलाकर भूमि को समतल करके क्यारियों, नालियों एवं मेंडों में विभाजित कर लेते हैं। गंठियों की रोपाई ऊँची उठी हुई क्यारियों में अथवा मेंडों पर करते हैं। एक मेड़ से दूसरी मेड़ की दूरी 30 सेमी. रखते हैं।

### गंठियों की मात्रा:-

एक हेक्टेयर क्षेत्र में प्याज लगाने के लिए 1.5 से 2.5 सेमी. व्यास की लगभग 20 किंवंदल गंठियों की आवश्यकता होती है।

### खाद एवं उर्वरक:-

15 टन गोबर की सड़ी खाद या कम्पोस्ट अथवा 3 टन वर्मी कम्पोस्ट प्रति हेक्टेयर की दर से खेत में एक माह पूर्व डालकर भली भांति मिला देते हैं। गंठियाँ रोपण से पूर्व 200 किग्रा. किसान खाद (कैल्शियम अमोनियम नाइट्रोजन) या 100 किग्रा. यूरिया, 300 किग्रा. सिंगल सुपर फॉस्फेट, 100 किग्रा. म्यूरेट ऑफ पोटाश तथा 30 किग्रा. बेन्टोनाइट सल्फर प्रति हेक्टेयर की दर से खेत की तैयारी करते समय (मेड़ बनाते समय) अच्छी प्रकार से भूमि में मिला देते हैं।

## गंठियों में रोपण की दूरी:-

अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिए गंठियों में मेड़ों के दोनों ओर 10 सेमी. की दूरी पर लगाते हैं।

## गंठियों में रोपण का समय:-

गंठियों की रोपाई 10 से 15 अगस्त तक कर देना चाहिए। जिससे फसल 25 अक्टूबर से 30 अक्टूबर तक प्राप्त हो जाय। रोपण 15 सितम्बर तक करके उपलब्धता 15 दिसम्बर तक बढ़ाई जा सकती है। परन्तु विलम्ब होने पर, खरीफ की मुख्य फसल निकलने से प्याज का भाव कम मिलता है, आर्थिक लाभ कम हो जाता है। गंठियों को रोपण से पूर्व कार्बन्डाजिम के 0.1% एवं कार्बोसल्फान के 2 मिली./ली. की दर से बने घोल में डुबाकर लगाने से गंठियाँ अधिकाधिक स्थापित होती हैं।

## फसल की देखभाल:-

अच्छी फसल एवं पैदावार प्राप्त करने के लिए 2 बार खरपतवार निकालना आवश्यक होता है। खरपतवार नाशक दवा जैसे स्टाम्प का 3.5 ली./हे. अथवा गोल का 1.0 ली./हे. की दर से गंठियाँ लगाने से पूर्व अथवा 3 दिन पश्चात् 800 लीटर पानी में डालकर भूमि पर छिड़काव करने से खरपतवार नियन्त्रण में सहायता मिलती है। इसके पश्चात् भी 40–45 दिन पर एक बार हाथ से खरपतवार निकालना आवश्यक होता है। टरगा सुपर 2 मिली./ली. + गोल 1 मिली./ली. की दर से घोल बनाकर रोपाई के 20 दिन बाद छिड़काव तथा 30 दिन से 45 दिन के मध्य निराई गुड़ाई करने से खरपतवार पर अच्छा नियन्त्रण पाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त स्पाम्प+टरगा सुपर के मिश्रण अथवा गोल एवं टरगा सुपर के मिश्रण का छिड़काव रोपाई के पूर्व तथा दूसरा रोपाई के 30 दिन बाद किया जाय तो खरपतवार कम होती हैं, पैदावार अधिक होती है।

फसल की सिंचाई समय—समय पर आवश्यकतानुसार करते रहना चाहिए। प्याज की फसल की पानी की आवश्यकता प्रारम्भिक वृद्धि अवस्था में कम होती है अतः सिंचाई देर से करते हैं, परन्तु जब गांठे बनना शुरू हो जाती हैं, पानी की आवश्यकता अधिक होती है, अतः सिंचाई की बारम्बारता बढ़ा देते हैं, सिंचाई जल्दी करते हैं। प्याज की फसल को टपक अथवा तुषार सिंचन प्रणाली द्वारा भी पैदा किया जा सकता है।

## खड़ी फसल में खाद देना (टॉप ड्रेसिंग):-

रोपाई में एक माह बाद 100 किग्रा. यूरिया प्रति हेक्टेयर की दर से दो बराबर भागों में खड़ी फसल में देते हैं। किसान खाद देने पर सिंचाई करना आवश्यक होता है, जब कि यूरिया सिंचाई के बाद डालते हैं। जब खेत में पर्याप्त नमी हो। एजोटोबैक्टर 5 किग्रा./हे. एवं पी.एस.बी. 5.0 किग्रा./हे. की दर से डालने पर उत्पादन अच्छा होता है। जल विलयशील उर्वरक एन.पी.के.

(19:19:19) एवं एन.पी.के. (13:0:45) के 1% घोल का छिड़काव प्याज में गुणवत्तायुक्त उत्पादन में लाभप्रद पाया गया है।

### फसल सुरक्षा:-

प्याज की फसल में पर्णीय रोगों की रोकथाम के लिए कवकनाशी मैन्कोजेब का 0.25% या क्लोरोथेलोनिल का 0.2% या प्रोजीनेब का 0.2% या कॉपर आक्सीक्लोराइड की 0.3% घोल 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव उपयोगी पाया गया है। थ्रिप्सकीट की रोकथाम हेतु कीटनाशी डेल्ट्रामेथ्रिन 2.8 ई.सी. का 0.095% लेम्डासाइहेलोथ्रिन 5 ई.सी. का 0.05%, फिप्रोनिल का 0.1%, स्पाइनोसेड 40% ई.सी. का 0.1% ई.सी. एवं प्रोफेनोफॉस 50 ई.सी. का 0.1% घोल 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव उपयोगी पाया गया है। कवकनाशी या कीटनाशी घोल में चिपकने वाला पदार्थ ट्राइटोन या सैन्डोविट 0.06% की दर से अवश्य मिलाना चाहिए। कवक—नाशी एवं कीटनाशी के मिश्रण का छिड़काव (मैन्कोजेब 0.25%+ मिथोमिल 0.8 ग्रा./ली., प्रोपीकोनाजोल 0.1% कार्बोसल्फान 2 मिली. प्रति ली., कॉपर आक्सी क्लोराइड 0.25%+ प्रोफेनोफॉस 1 मिली. प्रति ली.) 15 दिन के अन्तराल पर रोगों एवं कीटों से सुरक्षा देने में उपयोगी सिद्ध हुआ है। सिलिका आधारित चिपकने वाले पदार्थ का 0.06% की दर से उपयोगी अधिक प्रभावी पाया गया है।

### खुदाई, सुखाना एवं पकाना:-

गंठियों के रोपण से लगभग 75 दिन में फसल खुदाई के लिए तैयार हो जाती है। सर्दी का मौसम होने के कारण इतनी पत्तियाँ पीली नहीं होती, लगातार वृद्धि होती रहती है। ऐसी स्थिति में फसल की परिपक्वता मालुम करना कठिन हो जाता है। इसलिए जब गाँठे अपना उचित आकार प्राप्त कर लें, रंग पूर्णतः विकसित हो जाए तब समझना चाहिए कि फसल खुदाई हेतु तैयार है, सिंचाई तुरन्त बन्द कर देना चाहिए।

सिंचाई बन्द करने के 15 दिन पश्चात् खुदाई करके प्याज को खेत में ही 'विन्डो' विधि से सूखने के लिए 8—10 दिन खेत में ही छोड़ देते हैं। जब पत्तियाँ पूरी तरह से सूख जाती हैं, गाँठों के ऊपर 2 से 2.5 सेमी गर्दन छोड़कर टॉप काट दिया जाता है।

### छँटाई एवं श्रेणीकरण:-

प्याज को बाजार में भेजने से पूर्व छँटाई करके जुड़वा, सड़ी—गली, रोग ग्रस्त, मोटी गर्दन वाली, डण्ठलवाली एवं चोट लगी प्याज अलग कर देते हैं अन्यथा बाजार भाव बहुत कम मिलता है। इसके पश्चात् आकार के आधार पर श्रेणीकरण करके 'ए', 'बी' तथा 'सी' श्रेणियाँ बनाकर बाजार भेजने से भाव अच्छा मिलता है, लाभ अधिक होता है।

## पैदावार:-

180 से 250 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर।

प्याज उत्पादन एवं किसान आय में वृद्धि हेतु निम्न गतिविधियां की जा सकती हैं:-

- प्याज उत्पादन हेतु नवीन अनुसंधान एवं आधुनिक तकनीकों के विकास हेतु उत्कृष्टता केंद्र एवं अनुसंधान संस्थान स्थापित करवाना।

(To establish Centre of Excellence and Research Institute for development of new research and modern techniques for onion production)

- बुवाई हेतु उन्नत बीज/बल्ब उपलब्ध करवाना।

(Providing improved seeds/bulbs for sowing)

- कटाई के पश्चात् प्याज भंडारण हेतु संरचना बनवाना।

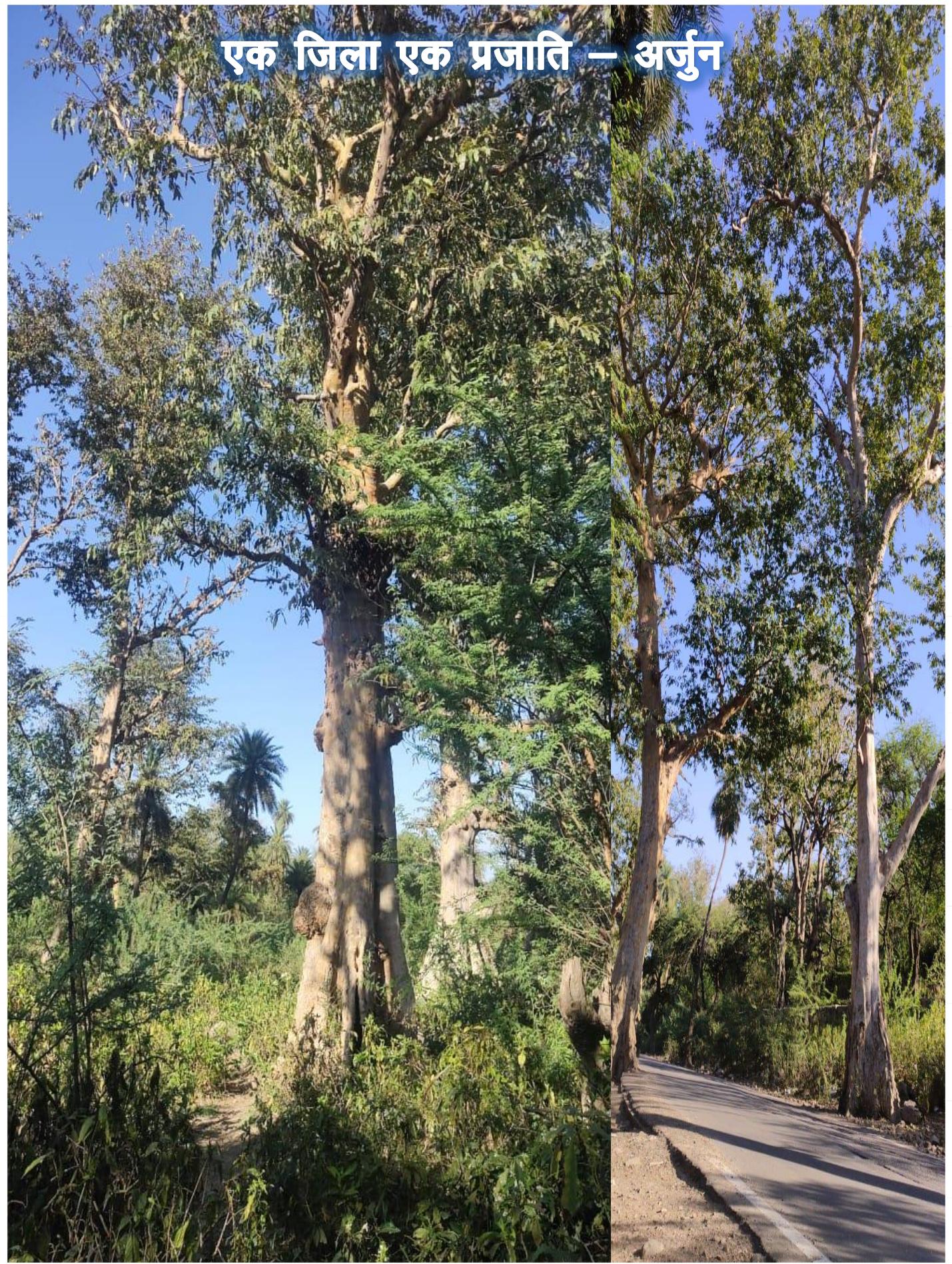
(Construction of structure for storing onions after harvesting)

- किसानों, शोधकर्ताओं और उद्योग हितधारकों के लिए प्रशिक्षण, ज्ञान प्रसार एवं क्षमता निर्माण करवाना।

(Providing training, knowledge dissemination and capacity building for farmers, researchers and industry stakeholders)

देश में स्थित प्याज संबंधित विभिन्न अनुसंधान संस्थानों में कृषकों एवं हितधारकों को भ्रमण करवाकर उच्च उत्पादन तकनीकों से अवगत करवाना। (To make farmers and stakeholders aware of high production techniques by organizing tours to various onion related research institutes located in the country)

# एक जिला एक प्रजाति – अर्जुन



## वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन विभाग, अलवर

1. जिले का नाम – अलवर

2. पंच गौरव के तहत चयनित वनस्पति – अर्जुन

3. संक्षिप्त परिचय :-

### अर्जुन

अलवर में बहुतायत में पाया जाने वाला अर्जुन का वृक्ष औषधीय महत्व के गुण रखता है। यह वृक्ष अलवर के सरिस्का वन क्षेत्र में प्रचुरता में देखा जा सकता है। इस वृक्ष का नाम महाभारत कालीन पाण्डु के पुत्र अर्जुन के नाम पर पड़ा है। अर्जुन की छाल हृदयघात, मधुमेह, उच्च रक्तचाप, अल्सर, मूत्राघात और अस्थमा जैसी बीमारियों के लिए प्रकृति का वरदान है।

प्रत्येक जिले में विरासत एवं पर्यावरण के साथ ही आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी कर प्रदेश में सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में ‘पंच—गौरव’ कार्यक्रम शुरू किया जा रहा है।

कार्यक्रम अन्तर्गत राज्य में प्रत्येक जिले उसकी विरासत एवं पारिस्थितिकी को ध्यान में रखते हुए “पंच—गौरव” के रूप में एक जिला—एक वनस्पति प्रजाति (One District-One Species) के संबंध में अलवर में अर्जुन (*Terminalia arjuna*) के पौधे का चयन किया गया है।

### अर्जुन वृक्ष (*Terminalia arjuna*):

एक आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण वृक्ष है, जिसे हृदय रोगों और अन्य शारीरिक समस्याओं के इलाज के लिए पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में प्रयोग किया जाता है। यह वृक्ष भारतीय उपमहाद्वीप में पाया जाता है और इसका वैज्ञानिक नाम *Terminalia arjuna* है। अर्जुन वृक्ष के विभिन्न हिस्सों, विशेष रूप से इसकी छाल, को औषधीय गुणों के लिए जाना जाता है।

### अर्जुन वृक्ष की पहचान

#### 1. वृक्ष का आकार:

- अर्जुन वृक्ष एक विशाल और ऊँचा वृक्ष होता है, जिसकी ऊँचाई 20–25 मीटर तक हो सकती है।
- इसका तना सीधा, बड़ा और कठोर होता है।
- अर्जुन का तना चौड़ा और शाखाएँ फैली हुई होती हैं, जिससे यह पेड़ बहुत छायादार होता है।
- इसका आदर्श वातावरण उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में होता है, खासकर नदी किनारे और गीली मिट्टी वाले स्थानों पर।

## 2. पत्तियाँ:

- अर्जुन के पत्ते लंबे, चमकदार और अंडाकार आकार के होते हैं।
- पत्तियों का रंग गहरा हरा होता है और यह लगभग 10 से 15 सेंटीमीटर लंबी होती हैं।
- यह पत्तियाँ वसंत और गर्मी के मौसम में अधिक ताजगी प्रदान करती हैं।

## 3. फूल:

- अर्जुन के फूल छोटे, सफेद या हल्के गुलाबी रंग के होते हैं, जो गुच्छों में आते हैं।
- इन फूलों की सुगंध हल्की और मधुर होती है।
- फूलों का आकार छोटा होता है, लगभग 1 सेंटीमीटर तक।

## 4. फल:

- अर्जुन के फल छोटे, गोल और भूरे रंग के होते हैं।
- इनका आकार लगभग 1 से 2 सेंटीमीटर होता है।
- फल के अंदर एक गुठली होती है, जो कभी—कभी औषधीय उद्देश्यों के लिए उपयोग में लाई जाती है।

## 5. छाल:

- अर्जुन की छाल सबसे अधिक औषधीय उपयोगी होती है। यह भूरे रंग की होती है और इसमें विशिष्ट रेजिन पाया जाता है, जो इसके औषधीय गुणों का मुख्य कारण होता है।
- छाल का उपयोग हृदय रोगों, रक्तदाब, पाचन समस्याओं और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं के उपचार में किया जाता है।

## अर्जुन वृक्ष के औषधीय लाभ

### 1. हृदय रोगों में लाभकारी:

अर्जुन की छाल का उपयोग मुख्य रूप से हृदय रोगों में किया जाता है। यह रक्तदाब को नियंत्रित करने में मदद करता है और हृदय की कार्यप्रणाली को सुधारता है। यह हृदय की मांसपेशियों को मजबूत बनाता है और रक्त संचार को बेहतर करता है।

– **हृदय की सेहत:** अर्जुन का सेवन रक्त वसा को कम करता है, जिससे हृदय की सेहत बेहतर होती है।

– **कैल्शियम और पोटेशियम:** इसमें कैल्शियम और पोटेशियम जैसे खनिज होते हैं, जो हृदय की कार्यप्रणाली को सामान्य बनाए रखते हैं।

– **कोलेस्ट्रॉल:** यह "अच्छे" कोलेस्ट्रॉल (HDL) को बढ़ाता है और "खराब" कोलेस्ट्रॉल (LDL) को कम करता है, जिससे हृदय रोगों का खतरा घटता है।

### 2. रक्तदाब नियंत्रित करना:

अर्जुन की छाल रक्तदाब को नियंत्रित करने के लिए प्रभावी मानी जाती है। इसके सेवन से उच्च रक्तदाब (हाइपरटेंशन) में आराम मिलता है। यह शरीर में पानी और सोडियम के संतुलन को बनाए रखता है, जिससे रक्तदाब सामान्य रहता है।

### 3. किडनी और यूरीनरी सिस्टम:

अर्जुन का पेड़ किडनी और मूत्राशय की समस्याओं के उपचार में भी सहायक होता है। अर्जुन की छाल का सेवन किडनी की कार्यप्रणाली को सुधारने, मूत्र मार्ग के संक्रमण (UTI) को रोकने और गुर्दे की पथरी को बाहर निकालने में मदद करता है।

### 4. वजन घटाने में सहायक:

अर्जुन की छाल का पाउडर वजन घटाने के लिए भी प्रभावी माना जाता है। यह शरीर की चर्बी को घटाता है और मेटाबोलिज्म को बेहतर बनाता है।

### 5. पाचन तंत्र को मजबूत करना:

अर्जुन का सेवन पाचन तंत्र को मजबूत करने में मदद करता है। यह अपच, गैस, पेट फूलने और कब्ज की समस्याओं के उपचार में सहायक होता है।

### 6. त्वचा और बालों के लिए:

अर्जुन की छाल और पत्तियाँ त्वचा के रोगों जैसे मुहांसे, एलर्जी और फुंसी के इलाज के लिए उपयोगी होती हैं। इसके सेवन से बालों की गुणवत्ता भी सुधारती है और बालों का झड़ना कम होता है।

### 7. तनाव और मानसिक शांति:

अर्जुन का सेवन मानसिक शांति और तनाव को कम करने में सहायक होता है। यह मस्तिष्क को शांत करता है और चिंता और अवसाद को कम करता है।

### 8. सांस संबंधित समस्याओं में:

अर्जुन का सेवन अस्थमा, ब्रोन्काइटिस और अन्य सांस संबंधी समस्याओं में भी लाभकारी होता है। यह श्वसन तंत्र को साफ करता है और सांस लेने में सुविधा प्रदान करता है।

## अर्जुन वृक्ष का औषधीय उपयोग

### 1. अर्जुन की छाल का काढ़ा:

— अर्जुन की छाल को उबालकर काढ़ा तैयार किया जाता है, जो हृदय रोगों और रक्तदाब को नियंत्रित करने में मदद करता है। यह शरीर को ताकत प्रदान करता है और शरीर के अंदर की गंदगी को बाहर निकालता है।

### 2. अर्जुन का पाउडर:

— अर्जुन की छाल को सुखाकर उसका पाउडर बनाया जाता है, जिसे आयुर्वेदिक औषधियों के रूप में उपयोग किया जाता है। यह पाचन तंत्र को ठीक करने और शरीर के सूजन को कम करने में मदद करता है।

### **3. अर्जुन का अर्क:**

— अर्जुन का अर्क हृदय के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए उपयोगी होता है। यह अर्क रक्तदाब को नियंत्रित करता है और हृदय की कार्यप्रणाली को सुधारता है।

अर्जुन वृक्ष एक अत्यंत महत्वपूर्ण आयुर्वेदिक औषधि है, जिसका उपयोग हृदय, रक्तदाब, किडनी, पाचन और त्वचा संबंधी समस्याओं के उपचार में किया जाता है। अर्जुन के विभिन्न हिस्सों, विशेष रूप से छाल, का उपयोग कई स्वास्थ्य लाभ प्रदान करता है। हालांकि, इसका सेवन डॉक्टर की सलाह पर ही करना चाहिए, क्योंकि इसके अत्यधिक सेवन से कुछ दुष्प्रभाव हो सकते हैं।

### **कार्य योजना—**

#### **1. पौधे तैयारी:**

अलवर जिले में उप वन संरक्षक, अलवर के अधीन नर्सरियों (मूंगरका, बूर्जा, नयाबास, भूगोर, महलबाग, राजपुरबड़ा, श्रीनगर, प्रतापगढ़, थानागाजी एवं चिमरावली) में लगभग 02 लाख अर्जुन के पौधे तैयार किये जा रहे हैं।

#### **2. आमजन की सहभागिता:**

जिले में राजकीय/गैर राजकीय संस्थाओं, स्काउट्स, गाईड्स, सामाजिक संगठनों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों, शिक्षण संस्थाओं एवं आमजन व अन्य द्वारा उपलब्ध स्थानों पर पौधारोपण किया जाकर उनका संरक्षण किया जाएगा।

स्थानीय लोगों को अर्जुन वृक्ष के महत्व, इसके औषधिया उपयोगों और पर्यावरणीय स्थिरता में इसकी भूमिका के बारे में शिक्षित करने के लिए जागरूकता अभियान आयोजित किये जाने हैं।

#### **3. आर्थिक उपयोगिता:**

अर्जुन की छाल एवं पत्तियों का उपयोग काढ़ा बनाने के लिए किया जाता है, साथ ही बैड कोलेस्ट्राल समेत कई अन्य रोगों के लिए भी इसके सेवन की सलाह दी जाती है। इन विशेष उद्देश्य के लिए ब्लॉक स्तर पर केन्द्र बनाए जाएंगे और ऐसे उत्पादों की बिक्री को प्रोत्साहित किया जाएगा।

प्रत्येक जिला स्तरीय कार्यक्रमों में भाग लेने वाले अतिथिगणों एवं सम्मानित प्रतिभागीगणों को उपहार स्वरूप अर्जुन के पौधे भेंट किये जायेगे।

#### **4. स्वयं सहायता समूहों को बढ़ावा देना:**

वन विभाग द्वारा आयोजित पर्यावरण दिवस, वन महोत्सव, हरियाली तीज जैसे हर कार्यक्रम में JFMC/SHG/VFPMC के द्वारा स्टॉल लगाए जाएंगे जिससे रोजगार के अवसर, महिला

सशक्तीकरण, प्रयोज्य आय में वृद्धि होगी। JFMc/SHG/VFPMC को आयुर्वेदिक औषधीयाँ तैयार करने हेतु प्रशिक्षण दिया जायेगा।

##### 5. इकोट्यूरिजम (अर्जुन पार्क):

अलवर में अर्जुन-थीम पर आधारित इको-पार्क स्थापित किये जायेगे ताकि पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सके और वृक्ष के महत्व के बारे में जागरूकता पैदा की जायेगी।

##### अपेक्षित परिणाम:

1. अलवर जिले में अर्जुन वृक्षों की संख्या में वृद्धि।
2. औषधीय उत्पादों के विकास के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था में बढ़ोतरी।
3. जैव विविधता और पर्यावरणीय स्वास्थ्य में सुधार।
4. समुदाय में जागरूकता बढ़ाना और महिलाओं को सशक्त बनाना।



## एक जिला एक खेल – कुश्ती



## खेल विभाग एवं युवा मामलात विभाग, अलवर

1. जिले का नाम – अलवर

2- पंच गौरव के तहत चयनित खेल – कुश्ती

**संक्षिप्त परिचय:-**

कुश्ती अलवर जिले का प्राचीन एवं परम्परागत खेल रहा है। यह खेल रजवाड़ों के समय से खेला जाता रहा है। इस खेल में समान वजन के दो पहलवानों के मध्य 6 मिनट की कुश्ती कराई जाती है और पॉइंट के आधार पर विजेता घोषित किया जाता है। अलवर के पहलवान अजरुदीन ने कॉमनवेल्थ गेम में द्वितीय स्थान, अनिल कुमार ने राष्ट्रीय पदक प्राप्त करने सहित राहुल व मलखान सिंह राजस्थान केसरी पहलानों ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त कर देश के गौरव को बढ़ाया है।

कुश्ती एक ओलंपिक खेल है। यह प्राचीन खेल है। भारत ने सर्वाधिक मैडल ओलंपिक खेल कुश्ती में प्राप्त किये है। यह खेल महिला व पुरुष दो वर्गों में खेला जाता है। यह 10 वजन वर्गों में खेला जाता है। महिलाओं की केवल फ्री स्टाईल कुश्ती होती है। पुरुष वर्ग में फ्री व ग्रीको दोनों स्टाईल की कुश्ती है।

यह महिलाओं के लिये इस लिये भी आवश्यक है। यह महिला आत्मरक्षा के दृष्टिकोण से आवश्यक है। देश की महिलाएं खेलों के द्वारा भारत में अपना भविष्य बना रही है। भारत में सर्वाधिक कुश्ती हरियाणा, दिल्ली, पंजाब, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान में खेली जाती है और राजस्थान में सर्वाधिक कुश्ती का गढ़ भरतपुर, अलवर मेवात, भीलवाड़ा क्षेत्र में है।

**सेन्टर :-** जैसे अलावडा, परवैनी ब्लॉक चिन्हित कर पंचगौरव के तहत कुश्ती के क्षेत्र में अलवर के प्रत्येक ब्लॉक पर सेन्टर खोले जाने प्रस्तावित है।

**एक खेल एक जिला :-** पंचगौरव के तहत अलवर में कुश्ती का मुख्य प्रशिक्षण केन्द्र खोला जाना प्रस्तावित है।

**अलवर में रहने की व्यवस्था :-** स्वामी विवेकानंद हॉस्टल वर्तमान में अम्बेडकर नगर में निर्माणाधीन रहा है। इसकी क्षमता 100 बैड की है। इसको बालिकाओं के रहने की व्यवस्था होने से यहां प्रशिक्षण लेने में आसानी रहेगी।

**कुश्ती हॉल :-** वर्तमान में इंदिरा गाँधी स्टेडियम में मल्टी परपज हॉल दो गद्दे कुश्ती के लगाये जा कर अभ्यास शुरू किया जा सकता है।

**कोच उपलब्धता :-** श्रीमती अंजना शर्मा एनआईएस अन्तर्राष्ट्रीय कुश्ती कोच उपलब्ध है। अलवर जिले में महिला कुश्ती कोच उपलब्ध है।

**ब्लॉक स्तर पर कुश्ती ट्रैनिंग शुरू** :— प्रत्येक ब्लॉक से एक पी.टी.आई. कुश्ती का ज्ञान रखते हैं। सभी को 15 दिन या एक माह की कोचिंग अलवर सेन्टर पर, नियमों की जानकारी, टेक्निक का अभ्यास कराया जाना प्रस्तावित है। यह एडवास कोर्स के तहत सिखाया जाना प्रस्तावित है। उसके बाद इन्हे संबंधित ब्लॉक पर चिन्हित स्कूलों में अभ्यास प्रशिक्षण देने के लिये आदेशित किया जाना प्रस्तावित है। यह कार्य 01 वर्ष की समयावधि में पूर्ण किया जाना है।

**आयु** :— विद्यालय स्तर पर कक्षा पांच के बाद कुश्ती अभ्यास प्रशिक्षण शुरू कर दी जानी प्रस्तावित है। जिससे कक्षा 12 तक प्रशिक्षु नेशनल मैडल देने योग्य तैयार हो जायेगे।

**अलवर सेन्टर** :— इंदिरा गाँधी सेन्टर का अलवर कुश्ती का हब बनाया जाना प्रस्तावित है। जिसमें 50 लड़के व 50 लड़कियों को अभ्यास एक साथ कराया जाना प्रस्तावित है। अधिक बच्चों से अच्छे परिणाम आने अपेक्षित है।

**शिक्षा** :— अकेडमी में रहने, खाने, किट सामग्री व शिक्षा, साथ ही यातायात व्यवस्था व प्रतियोगिता टी.ए. देने की व्यवस्था राज्य सरकार द्वारा वहन की जाती है। खेलों में चिकित्सा संबंधी व्यवस्था राज्य सरकार वहन करती आ रही है। यह सुविधा अन्य जिलों की अकेडमीयों को दी जा रही है। वही अलवर जिले पर लागू किया जाना प्रस्तावित है।

कुश्ती हॉल, सोनावाथ, स्टीमवाथ, फिजियो इत्यादि भी व्यवस्था अकेडमीयों को दी जाना प्रस्तावित है।

**लाभ** :— यदि यह कार्ययोजना वर्ष 2025–26 से लागू की जाती है एवं यदि यह अकेडमी अलवर के छोटे नर्सरी बच्चों को प्रशिक्षित करती है तो 2036 तक अलवर अकेडमी भविष्य में ओलंपिक खिलाड़ी तैयार करने में सक्षम है।

समाज में प्रतिदिन बच्चियों के साथ बढ़ते बलात्कार जैसी घटनाये से सरकार चिन्तित है। एवं महिला आत्मरक्षा की काफी योजना चला रही है। यह अकेडमी आत्मरक्षा की मिसाल होगी एवं भारत की बालिका मजबूत होगी तो राष्ट्रीय मजबूत होगा। आज नारी हर क्षेत्र में आगे है बल से, दिमाग से, नारी अपने भारत का गौरव बनेगी।

**ब्लॉक स्तर पर ट्रेनिंग** :— ब्लॉक स्तर पर कुश्ती के अभ्यास कराने वाले पीटीआई द्वारा सुबह प्रार्थना के बाद एक-दो घण्टा बालक-बालिकाओं को कुश्ती आवश्यक रूप से सिखाया जाना प्रस्तावित है। इस प्रकार उसकी ट्रेनिंग अभ्यास करवाया जाना प्रस्तावित है। लेसन/चैप्टर प्लान बनाकर सिखाया जाना प्रस्तावित है।

**परिणाम** :— राज्य सरकार द्वारा कुछ वर्ष पहले बालिकाओं की कुश्ती स्कूल स्तर पर शुरू की गई है। उन्हे अब स्कूल स्तर से खेलने को प्रतियोगी माहौल मिलेगा। राज्य स्तर, नेशनल, अन्तरराष्ट्रीय, ऐशिया, वर्ल्ड, ओलंपिक पर पदक जितने का सपना पूरा होगा।

**कैरियर :-** मैडल लाने पर राज्य सरकार में नौकरी के अवसर उपलब्ध हैं।

**अखाडा अडोपट करना :-** अखाडा गोद लेना (कुश्ती अखाडा गोद चिन्हित) यह भारत सरकार की योजना है। प्रत्येक ब्लॉक स्तर का एक स्कूल गोद लेने से वहां सामग्री, कोच, गद्दे, बड़ा मैट या छोटा मैट दिया जाता है जैसे हरियाणा के स्कूल में कुश्ती के छोटे मैट दिये जा रहा है।

अलवर जिले में प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर योजना के तहत अखाडा गोद लेना, जिम, छोटा मैट दिया जाने से खेल में गति आ जावेगी।

**खेलो इंडिया :-** खेलो इंडिया के तहत प्रत्येक ब्लॉक स्तर पर सामग्री दी जाये तो खेलो को बढ़ावा मिलेगा।

**लोकल नेता या जन प्रतिनिधित्व :-** कुश्ती का खेल लोकप्रिय खेल है। यह अलवर मेवात की नस—नस में है। इस खेल हेतु प्रशिक्षण सामग्री ज्यादा मंहगी नहीं आती है। गद्दे की व्यवस्था स्थानीय जन प्रतिनिधि या भामाशाह द्वारा विद्यालयों को उपलब्ध करवाई जा सकती है।

**मिट्टी के अखाड़े :-** आज भी मिट्टी के अखाड़े प्रत्येक ग्राम में स्वंय के स्तर चलाये जा रहे हैं। उनको भी गददो पर सुविधा दी जावे तो खेल निखर सकते हैं।

अलवर कुश्ती अकेडमी :-

1. कुश्ती का हॉल सीएस के द्वारा बनवाया जा रहा है।
2. कुश्ती का मैट कम से कम 3 सैट मैट
3. सोनावाथ, स्टीमवाथ, जिम, ट्रेनिंग सामग्री इत्यादि।
4. रहने के लिये वातानुकूलित कमरे 100
5. अच्छा स्वरथ आहार दिया जावें।
6. फिजियोथेरेपिस्ट सेन्टर चोट निवारण।
7. मनोवैज्ञानिक सेन्टर
8. शिक्षा फ्री।
9. आने जाने की व्यवस्था।
10. कीट व्यवस्था।
11. एक अनुभवी कोच, सपोटिंग स्टॉफ
12. आधुनिक ट्रैनिंग सामग्री।
13. सौर ऊर्जा प्लान।

बच्चों के खाने, खेलने, सोना/आराम करने की सम्पूर्ण व्यवस्था की जानी प्रस्तावित है।

जिससे की वह अन्य गतिविधियों से दूर रहतं हुए केवल खेल पर ही केन्द्रीत रहे, जिससे की खेल अकेडमी एक साकार रूप ले सकेगी। अलवर की भौगोलिक स्थिति राष्ट्रीय राजधीन क्षेत्र में दिल्ली के पास है। यह अकेडमी भविष्य की सबसे अच्छे खिलाड़ी देने वाली अकेडमी बनेगी।

खिलाड़ियों की आयु पर भी विशेष ध्यान दिया जाना आवश्यक है, कम आयु के बच्चों को ट्रैनिंग दी जाकर सपना पूरा किया जा सकता है। पंच गौरव का ब्लॉक स्तर के सेन्टर जैसे अलावडा, परवैणी ब्लॉक पर चिन्हित करके अभ्यास शुरू करवाया जाना प्रस्तावित है।

मुख्य ट्रेनिंग सेन्टर अलवर प्रस्तावित है।



प्रत्येक ब्लॉक से पी.टी.आई. को कुश्ती में प्रशिक्षित किया जाना प्रस्तावित है।



प्रशिक्षित पी.टी.आई. द्वारा प्रत्येक ब्लॉक पर अलावडा, परवैणी आदि पर अभ्यास कराया जाना प्रस्तावित है।



विद्यालयों में कम से कम 02 घण्टे का कुश्ती खेल पीरियड लागू किया जाना प्रस्तावित है।



### राष्ट्रमंडल कुश्ता...

## अलवर के अजहरुद्दीन को कास्य पदव

जबपुर अलवर @ पत्रिका राजस्थान के अजहरुद्दीन ने दक्षिण अफ्रीका के जोहानसबर्ग में सोमवार को सम्पन्न राष्ट्रमंडल कुश्ती प्रतियोगिता में कास्य पदक जीता। अजहरुद्दीन ने 92 किलोग्राम भार वर्ग में कास्य पदक हासिल किया। राजस्थान कुश्ती संघ के अध्यक्ष सीपी सिंह ने पदक जीतने पर अजहरुद्दीन को बधाई दी है। अंतरराष्ट्रीय कुश्ती कोच अंजना शर्मा, एथलेटिक्स कोच सबल प्रतापसिंह एवं अलवर जिला खेल अधिकारी राजेश शर्मा ने अजहरुद्दीन के पदक जीतने पर खुशी



जताई है। नई दिल्ली से प्राप्त समाचार के अनुसार प्रतियोगिता में भारतीय पहलवानों ने शानदार प्रदर्शन करते

हुए 30 में से कुल 29 स्वर्ण पदक अपने नाम किए। भारत ने टूर्नामेंट में 29 स्वर्ण के अलावा 24 रजत और छह कांस्य सहित कुल 59 पदक जीता। प्रतियोगिता के पहले दिन शनिवार को भारत ने 10 स्वर्ण पदक जीते थे। चैम्पियनशिप में भारतीय पहलवानों का ग्रीष्मों रोमन स्टाइल कुश्ती में प्रदर्शन एकतरफा रहा जहाँ उन्होंने दब पर लगे सभी 10 वजन श्रेणियों के स्वर्ण पदक जीते थे। स्वर्ण पदक जीतने वाली पुरुष पहलवानों में राजेंद्र कुमार (55 किग्रा), मनीष (60 किग्रा), विकास (63 किग्रा), अनिल कुम आदित्य कुडू (72 किग्रा), सुनील (87 हरदीप (97 किग्रा) नवीन (130 किग्रा) जा इसके अलावा नवीन (5: जानेंद्र (60 किग्रा), गोरख किग्रा), मनीष (67 कुलदीप मलिक (72 मंजीत (77 किग्रा), अमर किग्रा), प्रभाल सिंह (8) सुमित (97 किग्रा) और सं किग्रा) ने रजत पदक जीते



## एक जिला एक पर्यटन स्थल – सरिस्का



## पर्यटन, कला एवं संस्कृति विभाग, अलवर

- जिले का नाम – अलवर
- पंच गौरव के तहत चयनित पर्यटन स्थल–सरिस्का बाघ संरक्षित क्षेत्र

### संक्षिप्त परिचय :-

अलवर–जयपुर मार्ग पर अलवर से करीब 35 किलोमीटर दूर स्थित सरिस्का अभयारण्य देशी व विदेशी सैलानियों के आकर्षण का मुख्य केन्द्र है। अलवर में दिल्ली, जयपुर सहित अन्य स्थानों के लिए साप्ताहिक अवकाश को मनाने के लिए विशेष ख्याति अर्जित कर चुका है। बाघ परियोजना क्षेत्र में शामिल किया गया। यहाँ बाघ, चीतल, सांभर, हिरण, चौसिंगा, नीलगाय, पैथर, जरख, जंगली बिल्ली जंगली सूअर तथा अन्य वन्य जीवों का स्वच्छन्द विचरण देखने के लिए देशी और विदेशी सैलानी वर्ष पर्यन्त आते रहते हैं। यह अभयारण्य हरे कबूतरों के लिए प्रसिद्ध रहा है। कांकवाड़ी का प्रसिद्ध किला भी इसी क्षेत्र में है। वर्तमान में सरिस्का अभयारण्य में बाघ–बाघिन व शावकों समेत कुल 42 बाघ हैं।

### सरिस्का टाइगर रिजर्व

सरिस्का टाइगर रिजर्व जयपुर से 110 किमी. व दिल्ली से लगभग 190 किमी. की दूरी पर स्थित प्रसिद्ध पर्यटक स्थल है। इस अभयारण्य का कुल क्षेत्रफल लगभग 1203 वर्ग किमी. है। सर्वप्रथम सरिस्का वन क्षेत्र के कुछ भाग में वर्ष 1955 में संरक्षित क्षेत्र घोषित किया गया था। वर्ष 1978 में सरिस्का को देश के 11 वे टाइगर प्रोजेक्ट के रूप में बाघ रिजर्व के रूप में शामिल किया गया। सरिस्का वन्य क्षेत्र अरावली की पहाड़ियों पर फैला हुआ है। इसके अलावा कालीघाटी, पाण्डुपोल, उमरी, बांदीपूल, बाघानी आदि अन्य छोटी–छोटी घाटियां हैं, जो वन एवं वन्यजीवों से समृद्ध हैं। यह वन क्षेत्र शुष्क, पतझड़ी एवं कांटेदार झाड़ियों वाला है। सरिस्का वन क्षेत्र मुख्यतः ढोक (एनोजिसस पेंडुला) और सालार (बोसवेलिया सेराटा) की वनस्पति से आच्छादित है। यह अलवर क्षेत्र में रूपारेल नदी का प्रमुख जलग्रहण क्षेत्र भी है। वन्य जीवों में बाघ सरिस्का की शान है। जून 2008 को एक बाघिन व जुलाई 2008 बाघ को रणथम्भौर से सरिस्का में सफलतापूर्वक बसाया गया। वर्तमान में यहाँ शावकों सहित 42 बाघ–बाघिन हैं और जो कि बाघों का कुनबा बढ़ाने के प्रयास में बहुत बड़ी सफलता है। सरिस्का टाइगर रिजर्व 40 से अधिक स्तनधारी प्रजातियों, 345 पक्षी प्रजातियों और विभिन्न अन्य प्रजातियों का घर है।

### पर्यटक स्थल के रूप में सरिस्का टाइगर रिजर्व

राज्य के प्रमुख वाइल्ड लाइफ पर्यटक स्थल के रूप सरिस्का का अपना विशिष्ट स्थान है। प्रति वर्ष काफी बड़ी संख्या में देशी–विदेशी पर्यटक भ्रमण के लिए सरिस्का आते हैं। यहाँ वन विभाग द्वारा सफारी की सुविधा उपलब्ध करायी जाती है। धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से मुख्य स्थल पाण्डुपोल हनुमानजी व श्री भर्तुहरि जी मंदिर भी सरिस्का में ही स्थित हैं।

## कार्य योजना

परियोजना का क्रियान्वयन राजस्थान वन विभाग एवं पर्यटन विभाग के संयुक्त प्रावधानो से किया जाना प्रस्तावित है। सरिस्का बाघ अभयारण्य में पर्यटकों की सुविधा बढ़ाने, जैव विविधता संरक्षण को बढ़ावा देने और पर्यावरणीय रूप से अनुकूल बुनियादी ढांचे का विकास करना। पर्यटकों को आकर्षित करने हेतु विभिन्न निम्न विकास कार्य करवाए जा सकते हैं जिनमें से प्रमुख हैं :

### प्रमुख विकास कार्य

#### (अ) पर्यटकों के लिए सुविधाएँ

##### 1. Interpretation Centre

- जैव विविधता, पारिस्थितिकी और वन्यजीव संरक्षण पर केंद्रित डिजिटल डिस्प्ले एवं वर्चुअल रियलिटी अनुभव।
- स्थानीय वनस्पतियों, जीवों एवं आदिवासी समुदायों के जीवन से जुड़ी प्रदर्शनी।
- बच्चों एवं शोधार्थियों के लिए इंटरैक्टिव लर्निंग जोन।

##### 2. Conference Hall का निर्माण

- 200 व्यक्तियों की क्षमता वाला आधुनिक ऑडिटोरियम।
- पर्यावरणीय सेमिनार, कार्यशालाओं एवं सरकारी बैठकों के लिए मल्टीपर्पज़ हॉल।
- वन्यजीव विशेषज्ञों, शोधकर्ताओं एवं स्थानीय प्रशासन के बीच संवाद हेतु सुविधा।

##### 3. प्रवेश द्वार

- थैंक यू बोर्ड एवम कुशालगढ़ स्थल पर भव्य प्रवेश द्वार बनाया जाकर सरिस्का में प्रवेश को अधिक आकर्षक बनाया जाएगा।
- पूर्व के सरिस्का गेट एवम टहला गेट पर बने प्रवेश द्वारों का जीर्णोधार किया जाकर प्रवेश को पर्यटकों हेतु सुगम एवम सुंदर बनाया जाना प्रस्तावित है।

##### 4. सूचना केंद्र (Tourist Information Centre)

- पर्यटकों को रूट मैप, पर्यटन गाइड, सुरक्षा निर्देश एवं टिकिटिंग की सुविधा।
- ई-गाइड एवं मोबाइल ऐप से रियल-टाइम सूचना उपलब्ध कराना।
- इको-टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए विशेष दिशानिर्देश एवं जागरूकता सामग्री।

##### 5. साफ-सफाई एवं कचरा प्रबंधन

- आधुनिक शौचालयों का निर्माण (बायोडिग्रेडेबल सिस्टम सहित)।
- हर प्रमुख स्थान पर कूड़ादान (ड्राई एवं वेट वेस्ट सेग्रीगेशन के साथ)।

- प्लास्टिक—मुक्त ज़ोन सुनिश्चित करने के लिए कड़ी निगरानी।

### (ब) बुनियादी ढाँचे का विकास

1. पर्यटकों के बैठने हेतु सुविधाएं
  - विश्राम स्थल
  - जल—पान की सुविधाएं
2. Signage System
  - हिंदी एवं अंग्रेज़ी में वन्यजीवों की जानकारी वाले साइनबोर्ड।
  - इको—ट्रेल्स एवं मार्गदर्शन हेतु स्पष्ट दिशासूचक बोर्ड।
  - आपातकालीन संपर्क जानकारी एवं निर्देश संकेतक।
3. पार्किंग सुविधा
  - पर्यटकों एवं कर्मचारियों के लिए समर्पित पार्किंग स्थल।
  - ई—व्हीकल चार्जिंग पॉइंट की स्थापना।
  - पार्किंग स्थल पर वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम का प्रावधान।
4. सीसीटीवी निगरानी
  - संवेदनशील क्षेत्रों में उच्च—गुणवत्ता वाले नाइट—विज़न सीसीटीवी कैमरों की स्थापना।
  - मुख्य प्रवेश द्वार (पार्किंग) एवं पर्यटक ट्रेल्स पर सुरक्षा कैमरा नेटवर्क।
  - नियंत्रण कक्ष में 24X7 मॉनिटरिंग सिस्टम।

### (स) पारिस्थितिकी तंत्र को मजबूत करने की पहल

#### 1. स्थानीय जैव विविधता का संरक्षण

- बाघों एवं अन्य वन्यजीवों की आवाजाही को सुगम बनाने के लिए ग्रीन कॉरिडोर विकसित करना।
- स्थानीय समुदायों के सहयोग से पारंपरिक पारिस्थितिकी संरक्षण कार्यक्रम।

#### 2. सौर ऊर्जा एवं सतत विकास

- पर्यटक स्थलों पर सोलर लाइटिंग सिस्टम।
- वर्षा जल संचयन एवं जल पुनर्चक्रण इकाई।
- इलेक्ट्रिक वाहनों का संचालन।

### (द) पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम

- स्थानीय समुदायों एवं स्कूलों के लिए विशेष कार्यशालाएँ।
- वन्यजीव संरक्षण पर आधारित डॉक्यूमेंट्री स्क्रीनिंग।
- इको—गाइड्स एवं स्वयंसेवकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम।

## संभावित लाभ

- पर्यटकों को उच्च स्तरीय सुविधाएँ
- वन्यजीव संरक्षण में वृद्धि
- स्थानीय समुदायों के लिए रोजगार के अवसर
- हरित पर्यटन को बढ़ावा
- सरिस्का बाघ परियोजना को राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पहचान
- यह योजना सरिस्का बाघ अभयारण्य को एक उत्कृष्ट पर्यावरणीय पर्यटन केंद्र बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगी।

